खेल भी पढ़ाई भी

लता पांडे*
(स्वर्गीय)

राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद्, नयी दिल्ली की ओर से वर्ष 2013 में फ़ील्ड विज़िट के दौरान दक्षिणी दिल्ली निगम प्रतिभा बालिका विद्यालय, आया नगर, नयी दिल्ली में तीन माह तक कार्य करने का अवसर मिला। मैंने अक्तूबर, 2013 के अंतिम सप्ताह से इस विद्यालय में जाना शुरू किया। मैंने जाने से पहले ही मन-ही- मन तय किया था कि मैं पहली कक्षा के बच्चों के साथ ही अधिक-से-अधिक समय रहूँगी। इसके कई कारण थे, जिनमें से एक प्रमुख कारण यह था कि सभी कहते हैं कि पहली कक्षा के बच्चों को पढ़ाना सबसे चुनौतीपूर्ण कार्य होता है। साथ-ही-साथ मैं यह भी जानना चाहती थी कि पहली कक्षा के ये नन्हे-नन्हे बच्चे किस तरह की भाषा का प्रयोग करते हैं, ये अपने साथ क्या-क्या भाषायी अनुभव लेकर विद्यालय आते हैं, कौन-कौन सी गतिविधियाँ इन्हें ज़्यादा आनंदित करती हैं?

सत्र अप्रैल, 2013 में आरंभ हो चुका था। इसीलिए जब मैं विद्यालय गई तो सोच रही थी कि अधिकतर बच्चियाँ अपना नाम लिखना-पढ़ना सीख गई होंगी। लेकिन जब मैं विद्यालय गयी तो बच्चों के सीखने-सिखाने की प्रक्रिया को लेकर मेरे बहुत से भ्रम टूटे। उनमें एक भ्रम यह भी था तीन-चार बालिकाओं को छोड़कर अपना नाम पढ़ना तो दूर, किसी भी वर्ण की पहचान बालिकाओं को नहीं थी। एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रकाशित पाठ्यपुस्तक रिमझिम इस विद्यालय में लागू थी। इस पुस्तक की कविता 'छह साल की छोकरी' मैंने पढ़ी तो तभी बच्चों ने ज़ोर-शोर से मेरे साथ कविता दोहराई। कविता में बच्चों ने भरपूर आनंद लिया। लेकिन कक्षा में कोई भी लड़की कविता की एक पंक्ति भी पुस्तक में देखकर पढ़ पाने में असमर्थ थी। इसी बीच छुट्टी के समय अपनी बेटियों को घर ले जाने आईं कुछ माताओं ने भी कहा, "इन्हें पढ़ना-लिखना सिखा दीजिए, इतने महीने स्कूल आते-जाते हो गए, अभी तक पढ़ना और अपना नाम तक लिखना नहीं आता है।"

माताओं का यह उलाहना सुनकर मुझे लगा कि कुछ ऐसी गतिविधि का इस्तेमाल करूँ ताकि खेल-खेल में पहली कक्षा की ये बालिकाएँ अपने-अपने नाम पढ़ना-लिखना तो सीखें ही, इन्हें वर्णमाला का ज्ञान भी हो जाए। खेल-खेल में सीखना बच्चों के लिए रोचक होता है। खेलना बच्चे का नैसर्गिक स्वभाव है। यही कारण है कि शिक्षा का

* *प्रोफ़ेसर*, प्रारंभिक शिक्षा विभाग, एन.सी.ई.आर.टी., नयी दिल्ली-110016

अधिकार कानून 2009 भी बालकेंद्रित शिक्षण पद्धति पर ज़ोर देता है।

मन में विचार आया कि क्यों न खेलगीत से ही शुरुआत की जाए। खेलगीत का इस्तेमाल करना सबसे अच्छा लगा क्योंकि खेल जहाँ बच्चों को आकर्षित करते हैं वहीं गीत बच्चों को लुभाते हैं। अपने शब्द, तुकबंदी, लय तथा ध्वन्यात्मकता के कारण खेलगीत सहज ही बच्चों की ज़ुबान पर रच-बस जाते हैं। रिमझिम-1 के दूसरे-तीसरे आवरण पृष्ठ पर एक खेलगीत दिया गया है –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

गीत को मैंने अभिनय के साथ सुनाया। सुनाते समय मैंने एक हाथ के ऊपर दूसरे हाथ को रखा। अँगूठे तथा कनिष्ठा (सबसे छोटी उँगुली) को फैलाते हुए मछली बनाई। मैं गीत की पंक्ति गाती, बच्चियाँ मेरे साथ दोहराती। उन्हें भी इस खेल-गीत में आनंद आया। किताब के आवरण पृष्ठ में केवल चार ही पंक्तियाँ थीं पर मैंने बच्चों को पूरा गीत सुनाया। इस गीत में 'पानी' और 'मछली' शब्द कई बार आए थे इसलिए मैंने 'पानी' शब्द बोलते हुए श्यामपट्ट पर लिखा 'पानी' और बच्चों से पूछा, "श्यामपट्ट पर मैने क्या लिखा है?" बालिकाएँ एक स्वर में बोल उठीं, "पानी।" फ़िर मैंने पूछा, "अब यह बताओ कि तुममें से किस-किसके नाम में 'प' आता है? 'प' कहीं भी हो सकता है। नाम के शुरू में, बीच में या आखिरी में।" बालिकाओं ने एक-एक कर बोलना शुरू किया- पिंकी, पूजा, पुष्पा। मैंने तीनों नाम श्यामपट्ट पर लिख दिए।

मैंने देखा कि पिंकी, पूजा और पुष्पा ने भी जब मैं श्यामपट्ट पर उनके नाम लिख रही थी, अपने-अपने नाम अपनी कॉपी में लिख लिए थे। इसके बाद मैंने बच्चों से पूछा, "पानी शब्द में एक तो है पा और दूसरा क्या है?" सारी बालिकाएँ समवेत स्वर में बोल उठीं-नी।

मैं आगे कुछ पूछती, इसके पहले ही नन्ही-सी दिखने वाली नैना बोल उठी, "मैडम जी, अब आप 'हम' से सबके नाम पूछेंगी न?" मैंने पूछा, "अरे! तुम्हें कैसे मालूम?" इस पर नैना की आँखों में चमक आ गई और उसने कहा, "पहले आपने 'प' से नाम पूछे थे ना।" नैना की समझ मुझे बहुत अच्छी लगी। नैना को पढ़ना आता है, यह मैं पहले दिन ही जान गई थी। मैंने कहा, "अब जिस-जिसके नाम में 'न' आता है वह अपना नाम बताए।" कक्षा में बहुत सारी लड़कियों ने हाथ खड़े कर दिए और शुरू कर दिया नाम बताना-नैना, निशा, अनुष्का, रोशनी, रहनुमा, उनसाबी, रूखसाना। मैंने सारे नाम श्यामपट्ट पर लिखे और कहा, "अच्छा अब एक-एक करके आओ और जहाँ तुम्हारा नाम लिखा है उसे पहचान कर उस पर फूल बनाओ।" एक-एक करके लड़कियाँ आती गईं और अपना-अपना नाम पहचान कर उस पर फूल बनाती गईं।

सभी लड़कियों ने अपना नाम सही पढ़ा और नाम के चारों ओर फूल बनाना उन्हें बहुत अच्छा लगा। फिर मैंने कहा, "बताओ किस के नाम में 'न' बीच में है, किसके नाम में अंत में और किस लड़की का नाम 'न' से शुरू होता है।" इसमें भी बच्चों ने सही बताया। इसका कारण शायद यह भी रहा होगा कि अपने संगी-

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 6 28-12-2015 AM 11:56:44

साथियों के नाम तथा उनकी ध्वनि से बच्चे परिचित थे। जब मेरे द्वारा नाम लिखे जा रहे थे और इस तरह एक पहचान तथा उस नाम की पहचान का स्थायी चित्र भी उनके स्मृति पटल पर अंकित होता जा रहा था। उस दिन जब कक्षा खत्म हुई तो कई लड़कियाँ बोल उठीं, "कल हमारे नाम वाला खेल कराना।" इस खेलगीत का ही नाम बच्चियों ने नामवाला खेलगीत कर दिया था। उसके बाद दो-तीन दिन तथा इस खेलगीत के अलग-अलग शब्द जैसे – मछली, हरा, गोपी आदि लेते हुए 'म', 'छ', 'ल', 'ह', 'र', 'ग', आदि वर्णों से बने नाम पूछे। एक सप्ताह के भीतर ही कक्षा की लगभग सभी लड़कियों को अपने-अपने नाम पढ़ना-लिखना आ गया था साथ ही अन्य वर्णों की पहचान भी हो चुकी थी। जब भी मैं ब्लैकबोर्ड पर कोई नाम लिखती तो सभी लड़कियाँ बड़े ध्यान से देखतीं यह बात मैंने बार-बार गौर भी की। इस बात से यह बात और बलवती हो गई कि बच्चों की बोली बात या उनमें बताए नामों को जब टीचर द्वारा ब्लैकबोर्ड पर लिखा जाता है तो बच्चों को भी मालूम पड़ता है कि बोली गई बात को कैसे लिखा जाता है।

अकसर अभिभावक बच्चों को वर्णमाला सिखाने की बात कहते रहते थे। इसलिए अब मुझे लगा कि कक्षा की लगभग सभी बालिकाओं को वर्ण पहचान तो हो ही चुकी है क्यों न अब इन्हें क्रम से वर्णमाला भी सिखा दी जाए, लेकिन वर्णमाला मैं नीरस तरीके से नहीं सिखाना चाहती थी। इसके लिए भी मैंने वही खेलगीत चुना। इसका कारण यह था कि अभिनय करते हुए यह खेलगीत गाना सभी बालिकाओं को अच्छा लगता था और उन्हें पूरा याद भी होता था। दूसरे दिन मैंने लड़कियों से कहा, ''आज बाहर मैदान में हम खेलगीत गाएँगे।'' चहकती हुई सभी बालिकाएँ उल्लास तथा उत्साह से बाहर मैदान में इकट्ठा हो गयीं। मैं बीच में खड़ी हो गई। फ़िर हमने शुरू किया-खेलगीत यांत्रिक बच्चों ने गाया –

हरा समंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी
इतना पानी इतना पानी
कमर कमर तक गहरा पानी

बालिकाएँ कमर में हाथ रखकर खड़ी हो गईं तो मैंने पूछा, "कमर में पहला वर्ण क्या है?" बालिकाएँ बोल उठीं, 'क'

मैंने कहा, "बोलो क, ख, ग, घ, ङ·" सभी बालिकाओं ने इसे गोल-गोल घूमते हुए दो-तीन बार दोहराया।

अब हमने फ़िर खेलगीत आगे बढ़ाया –

हरा समंदर गोपी चंदर
बोल मेरी मछली कितना पानी
इतना पानी इतना पानी
टखने-टखने छिछला पानी
बोल मेरी मछली कितना पानी

बालिकाएँ टखने को छूते हुए झुककर खड़ी थीं। मैंने पूछा, "टखने में पहला वर्ण क्या है?"

बालिकाओं ने जबाब दिया, 'ट'

उसके बाद मैंने कहा, "ट, ठ, ड, ढ, ण।

सभी बालिकाओं ने गोल-गोल घूमते हुए दो-तीन बार दोहराया।

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 7 28-12-2015 AM 11:56:44

खेलगीत फ़िर आगे बढ़ाया

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

इतना पानी इतना पानी

चेहरे-चेहरे तक है पानी

बालिकाओं ने गोल घेरे में घूमते हुए इन पंक्तियों को दोहराया।

मैंने पूछा, "चेहरा शब्द किससे शुरू होता है?"

बालिकाओं ने कहा, 'च' से,"

मैंने कहा बोलो, "च, छ, ज, झ, ञ।"

बालिकाओं ने इसे मेरे साथ गोल घेरे में घूमते हुए दोहराया।

मैंने गौर किया कि गीत तो गीत पर वर्णमाला की पंक्तियों को दोहराने में भी बालिकाएँ जमकर आनंद ले रहीं थीं

खेलगीत फ़िर जारी किया –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

पाँवों-पाँवों तक है पानी

मैंने पूछा, "पाँवों शब्द किससे शुरू होता है?"

लड़कियाँ बोली, "प से।"

मैंने कहा, "अब मेरे साथ बोलो, प, फ, ब, भ, म," लड़कियों ने ज़ोर से दोहराया प, फ, ब, भ, म, खेलगीत की अगली पंक्तियाँ थीं –

हरा समंदर गोपी चंदर

बोल मेरी मछली कितना पानी

इतना पानी इतना पानी

नाकों-नाकों तक है पानी

बालिकाओं द्वारा पंक्तियाँ दोहराने के बाद मैंने पूछा, "नाक शब्द का पहला अक्षर क्या है?"

बालिकाओं के 'न' बताने पर मैंने कहा, "मेरे साथ बोलो, त, थ, द, ध, न।"

खेल गीत खत्म करते हुए मैंने कहा, "चलो अब एक बार फ़िर से गाते हैं –

क ख ग घ ङ

च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण

त थ द ध न

प फ ब भ म"

दो-तीन दिन इस तरह खेलते हुए बच्चों ने खेल ही खेल में पूरी वर्णमाला सीख ली थी। वर्णों की पहचान तो वे पहले ही खेल ही खेल में कर चुकी थीं। खेल ही खेल में वर्णमाला सीखने-सिखाने का यह तरीका विद्यालय की अन्य शिक्षिकाओं को भी अच्छा लगा। बच्चों द्वारा सीखने का उत्साह तथा सीखने में उनके आनंद को देखते हुए यह सिद्ध हो गया था कि खेल सीखने का एक अच्छा माध्यम है। खेल द्वारा सीखने-सिखाने की बात मैंने अन्य कक्षाओं में देखी।

फ़रवरी माह में एक दिन सुबह से ही मूसलाधार बारिश हो रही थी। सभी कक्षाओं में उपस्थिति बहुत कम थी। कहीं भी पढ़ने-पढ़ाने का माहौल नज़र नहीं आ रहा था। मैं तीसरी कक्षा में गई तो छात्राएँ फ़िल्मी गीत गा रही थीं। सभी छात्राएँ समवेत स्वर में बोल उठीं, "मैडम जी आज पढ़ने का मूड नहीं है। कितना अच्छा मौसम है, आज हम गाना गाएँगे।" कक्षा में

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 8 28-12-2015 AM 11:56:44

तेईस छात्राएँ उपस्थित थीं। उनका मूड भाँपकर मैंने कहा, "तुम लोग सही कह रही हो, आज तो पढ़ाई-लिखाई का मौसम ही नहीं है। चलो, आज हम कोई खेल खेलते हैं।" लड़कियाँ खुश हो उठीं। इस कक्षा की शिक्षिका ने मुझे बताया कि इस कक्षा में कुछ लड़कियाँ ऐसी भी हैं जिन्हें अभी तक वर्णों तथा मात्राओं की पहचान नहीं है। फ़िल्मों में इनकी रुचि देखकर मैंने सोचा कि क्यों न इन्हें फ़िल्मों के नामों वाले खेल के माध्यम से ही वर्णों की पहचान करा दी जाए।

मैंने कहा, "आज हम एक मज़ेदार खेल खेलेंगे और वह भी फ़िल्मों के नाम वाला।" लड़कियाँ खुश हो गईं। मैंने लड़कियों को दो समूहों में बाँटा-ए और बी। फ़िर मैंने निर्देश दिया, मैं ब्लैकबोर्ड पर किसी फ़िल्म के नाम की केवल मात्राएँ लिखूँगी। आपको वर्ण बताते हुए फ़िल्म का नाम भरना है। जितने वर्ण वाला फ़िल्म का नाम होगा उससे दोगुने वर्ण बताने का अवसर आपको मिलेगा जैसे बाज़ीगर फ़िल्म के लिए मैंने लिखा ा ी ¯ ¯ इसमें चार अक्षर है तो आपको आठ अवसर मिलेंगे। प्रत्येक फ़िल्म का नाम दो मिनट में बताना है। नहीं बताने पर दूसरी टीम को अवसर मिलेगा। उसने बता दिया तो अंक दूसरी टीम को चले जाएँगे। फ़िल्मों के नाम वाले खेल की बात सुनते ही बच्चे उत्साहित हो गए। फ़िल्मों के नाम बताने में उन्हें बहुत आनंद आ रहा था। दोनों समूह बराबरी में चल रहे थे। मैं गौर कर रही थी कि जो लड़कियाँ कक्षा में कभी नहीं बोलती थीं, आज इस खेल में वह भी भाग ले रहीं थीं। पूरे एक घंटे तक यह खेल चला। छुट्टी की घंटी बजी, पर लड़कियाँ और खेलना चाह रहीं थीं। कक्षा से निकलते समय मुझे यह विश्वास हो गया था कि खेल ही खेल में ऐसी छात्राओं को भी वर्णों तथा भाषाओं की पहचान हो गई थी जिन्हें अभी तक पढ़ना नहीं आता था। दूसरे दिन मैंने इसी कक्षा में फ़िर यह खेल दोहराया। अबकी बार फ़िल्मों के नामों के स्थान पर फल, सब्ज़ी, शहरों के नाम लिए। मैं ब्लैकबोर्ड पर उन्हीं छात्राओं से वर्णों को सही जगह पर लिखने को कह रही थी जिन्हें वर्ण अक्षर की न तो सही पहचान थी और न ही उन्हें वर्णो का क्रम पता था। आज छात्राओं की प्रगति काफ़ी संतोषजनक थी। खेल ही खेल में सीखना सभी को आनंदमय लग रहा था।

वास्तव में प्रत्येक बच्ची सीखना चाहती है। वह तो हमारी कक्षाओं में सीखने-सिखाने की नीरस तथा उबाऊ प्रक्रिया उनमें सीखने की चाह को सोख लेती है। सीखने-सिखाने के तरीके रोचक हों तो हर बच्ची सीख सकती है।

❑❑❑

संदर्भ

कुमार, कृष्ण, 1996, *बच्चे की भाषा और अध्यापक एक निर्देशिका*, नेशनल बुक ट्रस्ट, इंडिया

पांडे, लता (संपादक), 2008 *पढ़ने की दहलीज़ पर— पढ़ने से संबंधित लेखों का संकलन*. राष्ट्रीय शैक्षिक अनुसंधान और प्रशिक्षण परिषद् , नयी दिल्ली

Prathmik Shikshak Jan 2015.indd 9 28-12-2015 AM 11:56:44